

Review Article

भारतीय शिक्षा और आधुनिकता

Chaman Singh Thakur

Ph.D. Education M.A. Hindi M.A. Pol. Science M.A. Yoga M.ED. PGDHE

I N F O

E-mail Id:

Prof.chaman2019@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0003-3814-2995>

How to cite this article:

भारतीय शिक्षा और आधुनिकता, Anu: a, Mul, Int, Jour, 2025; 10(3&4): 18-22.

Date of Submission: 2025-10-28

Date of Acceptance: 2026-12-28

A B S T R A C T

भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है, जिसमें गुरुकुल परंपरा से लेकर विश्वविद्यालयों जैसे नालंदा और तक्षशिला का योगदान रहा है। आधुनिकता के आगमन के साथ, शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य और पद्धतियों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। इस शोध में भारतीय पारंपरिक शिक्षा और आधुनिक शिक्षा के मूलभूत तत्वों की तुलना करते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि कैसे आधुनिकता ने भारतीय शिक्षा को प्रभावित किया है। साथ ही, यह भी विचार किया गया है कि क्या आधुनिक शिक्षा प्रणाली भारतीय मूल्यों, सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप है। शोध का उद्देश्य एक ऐसी संतुलित शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता को रेखांकित करना है, जो आधुनिक ज्ञान के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को भी समाहित कर सके।

मुख्य शब्द: भारतीय शिक्षा प्रणाली, प्राचीन गुरुकुल परंपरा, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति

परिचय

आधुनिकीकरण या आधुनिकता को अंग्रेजी भाषा में मॉडर्नाइजेशन कहते हैं जो कि अंग्रेजी भाषा के शब्द मॉडर्न से बना है जिसका अर्थ होता है आधुनिक। आधुनिक शब्द आधुनिकता की चकाचौंध, सतत विकास के नए आयाम तथा देश-विदेश में हो रहे अनुसंधान-आविष्कार और नई तकनीकी का परिचायक है। इस प्रकार आधुनिकीकरण देश और दुनिया में हो रहे नवाचारों तथा वैज्ञानिक आविष्कारों से जो वैश्विक स्तर पर मानवीय जीवन शैली में परिवर्तन हो रहे हैं उसे दर्शाता है। आधुनिकता में नवीन गतिशील विचारों का समावेश होता है। इसलिए आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को विकास की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। आधुनिकीकरण में शहरीकरण, आर्थिक विकास, औद्योगिकीकरण आदि प्रक्रिया शामिल है जो नित नए अवसर प्रदान कर सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होती है। आधुनिकीकरण ने देश और दुनिया में नए विचारों को जन्म दिया है। प्राचीन तथा कई रूढ़िवादी विचारों से बाहर

निकलकर अब आधुनिकता के दौर में वैश्विक जनमानस नई एवं व्यापक सोच के साथ समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए उठ खड़ा हुआ है। आधुनिकीकरण से आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। आज हर व्यक्ति एक सुखी समृद्ध तथा खुशहाल जीवन जीना चाहता है आधुनिकता की चकाचौंध से हर कोई प्रभावित है और अपना जीवन स्तर उन्नत करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। आधुनिकता की अवधारणा ने एक तरफ व्यक्ति का आंतरिक सुख चैन छीन लिया है तो दूसरी तरफ विकास के नए कीर्तिमान भी स्थापित किए हैं। निरंतर आधुनिक होते परिवेश में आज संबंधों में औपचारिकताएं बढ़ गई हैं और आंतरिक जुड़ाव में अभाव के साथ अपनापन कहीं लुप्त सा हो गया है। आज धन लोलुपता तथा स्वार्थपरता कुछ अधिक बढ़ गई है जिसके कारण आधुनिकता की अंधी दौड़ में मानवीय मूल्यों तथा उच्च आदर्शों को भूलकर आदमी अनैतिक और अनुचित रास्तों से ही सही पर आगे बढ़ना चाहता है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति इसकी स्वीकृति नहीं देती। भारतीय धर्म और दर्शन में निहित

शिक्षा सर्वमंगल की कामना करते हुए निस्वार्थ भाव से स्नेह, सहयोग और परोपकार की शिक्षा देती है।¹

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया नित नए विचारों को जन्म देती है। यह सर्वविदित है कि प्राचीन बहुमूल्य ज्ञान एवं उच्च आदर्शों के साथ - साथ नए विचारों को उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए ग्रहण करना आवश्यक है। प्राचीन ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ना तथा उसमें बेहतर सामंजस्य बिठाना अत्यंत आवश्यक है तभी राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। आधुनिकता की चकाचौंध में अपने उच्च आदर्शों तथा संस्कारों को भूल जाना उचित नहीं है। हमें आधुनिकता को निश्चित रूप से अपनाना चाहिए लेकिन एक सकारात्मक चिंतन के साथ आगे बढ़ना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम अपने दायित्वों का भली भांति निर्वहन करते हैं तो यह हमारे स्वयं के लिए तथा समाज के लिए सकारात्मक परिणाम लेकर आ सकता है। आधुनिकता को एक सकारात्मक सोच के साथ ग्रहण करना चाहिए। जब- जब हमारी आधुनिक सोच पर पाश्चात्यकरण का प्रभाव पड़ेगा तब-तब हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कार कमजोर पड़ेंगे। इसलिए उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए पाश्चात्यकरण के नकारात्मक प्रभाव से बचना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा एक दिन हम अपनी शिक्षा, संस्कृति और संस्कारों को निश्चित रूप से खो देंगे।

आधुनिकीकरण के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त किए हैं। इस संबंध में श्रीनिवास ने कहा है कि आधुनिकीकरण किसी पश्चिमी देश के प्रभाव या परोक्ष संपर्क के कारण किसी गैर पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तनों के लिए एक प्रचलित शब्द है। आधुनिकीकरण के संबंध में मेरा मानना है कि आधुनिकीकरण नवीन विकासात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ते हुए वैश्विक स्तर पर हो रहे सकारात्मक परिवर्तनों की एक व्यापक एवं सौद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। डेनियल लर्नर ने अपनी एक पुस्तक में आधुनिकीकरण के संबंध में अत्यंत महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं। उन्होंने आधुनिकीकरण की कुछ विशेषताओं का वर्णन किया है जिनमें बढ़ता हुआ नगरीकरण तथा बढ़ती हुई साक्षरता आदि शामिल हैं। शिक्षा से मनुष्य की क्षमता में वृद्धि होती है तथा देश का आर्थिक लाभ होता है जो कि प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में योगदान देता है। इस प्रकार राजनीतिक जीवन की विशेषताओं को उन्नत करने में भी शिक्षा की महत्वपूर्ण विशेषता होती है।²

शरद कुमार ने भारत में आधुनिकीकरण के चार मुख्य आयामों की चर्चा की है जिसमें व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक चर्चा शामिल है। वर्तमान भारतीय समाज को अगर आधुनिकीकरण के संदर्भ में देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि भारत में उदारीकरण की नीति के पश्चात तेजी से सामाजिक परिवर्तन होने लगे। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से विश्व में एक नवीन दृष्टिकोण का उदय हुआ और निरंतर नई संभावनाएं पनपने लगीं। एक ओर शहरीकरण बढ़ने लगा तो दूसरी ओर आम आदमी का जीवन स्तर उन्नत होने लगा। औद्योगिक क्रांति ने विश्वभर में नवीन समीकरण पैदा किए जिससे सामाजिक परिवर्तन को बल मिला और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किए जाने लगे।

भारत एक विशाल देश है और भारत की प्राचीन संस्कृति अत्यंत समृद्ध है। प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक के भारतीय इतिहास पर अगर दृष्टि डालें तो निश्चित रूप से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हम अपने गौरवपूर्ण इतिहास और संस्कृति से कहीं ना कहीं दूर होते जा रहे हैं। जिस तरह आज आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति पर हम पर हावी होती जा रही है यह हमारे लिए यह अच्छे संकेत नहीं है। आधुनिकता की आड़ में पश्चिमीकरण को बढ़ावा देना उचित नहीं है। हमारे नैतिक मूल्य, विश्वास, परंपराएं, हमारी समृद्ध संस्कृति, रीति - रिवाज, हमारी आस्था, हमारा जीवन दर्शन और हमारे उच्च आदर्श आज भी विश्व के लिए उतने ही अनुकरणीय तथा प्रासंगिक हैं जितने सैकड़ों हजारों वर्ष पहले थे। सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ यदि हम आगे बढ़ें तो हम पुनः एक नए युग का सूत्रपात कर सकते हैं।

आधुनिकीकरण और शिक्षा: आधुनिक भारत की दिशा

वर्तमान भारतीय जनमानस की सोच और चिंतन के स्तर पर नजर डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि हम आधुनिकता की चकाचौंध में कहीं ना कहीं अपनी वास्तविक पहचान खोते जा रहे हैं और अपनी संस्कृति और संस्कारों को भूलते जा रहे हैं, जिसे किसी भी तरह से उचित नहीं समझा जा सकता है। [3]

भारत में अंग्रेजों के आगमन से आधुनिकीकरण को बल मिला। अंग्रेजों द्वारा भारत को अपने सांचे में ढालने के प्रयास किए गए। नवीन वैज्ञानिक खोजों ने जीवन शैली को एक नई दिशा दी। नई तकनीकों ने जीवन की मुश्किलों को कम अवश्य किया। धीरे - धीरे भारत में नए आधुनिक उद्योग स्थापित किए जाने लगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात निश्चित रूप से भारत आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी से आगे बढ़ने लगा। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा व्यावसायिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में नए परिवर्तन होने लगे। स्वतंत्र भारत में पंचवर्षीय योजनाओं का दौर प्रारंभ हुआ और आम आदमी की मूलभूत सुविधाओं पर ध्यान दिया जाने लगा। बहुत सारी चुनौतियों का सामना करते हुए आज हम 21वीं शताब्दी के तीसरे दशक में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन अभी भी तीव्र गति से आगे बढ़ रही दुनिया में हमारे सामने बहुत सारी चुनौतियाँ हैं। यह सत्य है कि विगत कुछ वर्षों से भारत की छवि में सुधार हुआ है और आज वैश्विक स्तर पर भारत की एक विशिष्ट पहचान बनी है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कुशल नेतृत्व में देश निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है और विश्व के समृद्ध देश भारत के बढ़ते प्रभाव को स्पष्ट रूप से महसूस कर रहे हैं। विकसित राष्ट्रों की तुलना में आज भले ही भारत पीछे हैं लेकिन हमारे वैश्विक प्रभाव और सम्मान में कोई कमी नहीं है। आज देश विभिन्न क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस प्रकार भारत आजादी के सौ वर्ष पूरे होने से पहले ही विकसित राष्ट्रों की सूची में शामिल होने के लिए संकल्पबद्ध है।

आज आधुनिकीकरण को भारतीयता के दृष्टिकोण से परिभाषित कर एक नए एवं सकारात्मक आधुनिकतावाद को विश्व जनमानस के सामने प्रस्तुत करने की जरूरत है। जिन उच्च आदर्श और मानवीय मूल्यों के कारण भारत सैकड़ों हजारों वर्ष पूर्व विश्वगुरु

के पद पर आसीन हुआ था उन्हें फिर से वैश्विक पटल पर लाना होगा। यदि हम विज्ञान और तकनीकी के साथ-साथ भारतीय धर्म और दर्शन में निहित उस विराट चिंतन और महान ज्ञान दर्शन को लेकर आगे बढ़ेंगे तो निश्चित रूप से सकारात्मक परिणाम निकलेंगे। यह भारत की दिशा और दशा बदलने के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है।⁴

आधुनिकीकरण के दौर ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को भी प्रभावित किया। आज शिक्षा में आधुनिक तकनीकों, विधियों तथा उपकरणों का प्रयोग निरंतर हो रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग में एक क्रांति उत्पन्न की है। शिक्षा भी आधुनिक तकनीकों के प्रभाव से वंचित नहीं रही इस प्रकार वर्तमान समय में समय की मांग को देखते हुए आज हर व्यक्ति की आशाओं, आकांक्षाओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राचीन विधियों तौर तरीकों और पाठ्यक्रम में गुणात्मक सुधार लाकर उचित परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। आज विश्व तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है इसलिए वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के लिए हमें शिक्षा प्रणाली में उचित सुधारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है।

शिक्षा में आधुनिकीकरण बदलते वैश्विक स्वरूप की एक मांग बन चुका है। वास्तव में शिक्षा ही वह सशक्त साधन है जिसके द्वारा किसी भी देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। इस दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन पर बल दिया जा रहा है। यह नई शिक्षा नीति नए भारत के निर्माण में अपनी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

शिक्षा पद्धति के संबंध में हार्वर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन के प्रोफेसर डेविड पार्किंस ने अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि आज ऐसी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है जो शिक्षार्थियों को अर्थपूर्ण ज्ञान दे सके। उन्होंने आगे कहा कि मेरे विचार से आज की शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो लोगों को उनका अस्तित्व बनाए रखने के लिए प्रेरित करें और जटिल वैश्विक युग में रहने का कौशल प्रदान कर उन्हें अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकें। उन्होंने समय की मांग को पूरा करने के लिए बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए हैं। यह उनकी दूरदर्शिता का परिणाम है कि उन्होंने शिक्षा प्रणाली को शिक्षार्थियों के लिए अर्थपूर्ण बनाने की वकालत की ताकि राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण किया जा सके। इस प्रकार गुणात्मक शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। हम इस दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं।

भारत में कोठारी आयोग ने शिक्षा के संबंध में जो सिफारिशें प्रस्तुत की है उनसे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा से ही बेहतर सामाजिक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। इस संबंध में भारतीय शिक्षा आयोग ने भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में निश्चित रूप से तीव्र गति लाने की आवश्यकता पर बल दिया है। शिक्षा ही वह साधन है जो सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए उत्तरदायी माना जाता है। बेहतर एवं गुणात्मक शिक्षा व्यवस्था की समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आधुनिकीकरण को सामाजिक, मानसिक, व्यावसायिक, शारीरिक तथा भौतिक विकास तथा

गतिशीलता के रूप में देखा जा सकता है। यह विकास एवं उन्नति की एक नवीन अवधारणा है।

समाज और राष्ट्र के विकास में शिक्षा का महत्व

जिनर ने सामाजिक परिवर्तन के संबंध में कहा है कि किसी कालखंड में समाज में जो परिवर्तन आता है वही सामाजिक परिवर्तन है। शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्र गति से आगे बढ़ाया जा सकता है। शिक्षा से समाज में जागरूकता आती है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास होता है। व्यक्ति में परस्पर स्नेह, सद्भाव, सहयोग, परोपकार तथा सबका सम्मान करने की भावना का विकास होता है। इस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ राष्ट्र का विकास शिक्षा द्वारा ही संभव है। सामाजिक एवं सकल मानवीय मूल्यों का विकास करने के लिए शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।⁵ उचित एवं सही शिक्षा के अभाव में समग्र रूप से आधुनिकीकरण की उम्मीद नहीं की जा सकती। शिक्षा ही आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति से आगे बढ़ाने का काम करती है। शिक्षा समाज को एक नई दिशा प्रदान करती है इसलिए आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाना तथा शिक्षा को व्यावहारिक और अर्थपूर्ण बनाना अत्यंत आवश्यक है तभी आधुनिकीकरण की शिक्षा की दिशा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ा जा सकता है आधुनिकीकरण एक जटिल वैश्विक प्रक्रिया है अतः शिक्षा रूपी पहिए से ही इसकी गाड़ी आगे बढ़ सकती है।

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था में गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है। शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। आधुनिकता के संदर्भ में शिक्षा जिस तरह भावी पीढ़ी के लिए उपयोगी और सार्थक होनी चाहिए कहीं ना कहीं वर्तमान शिक्षा प्रणाली उन शैक्षिक उद्देश्यों को पूर्ण कर पाने में असमर्थ रही है। यह देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत बड़ी समस्या है हमें जिन उच्च नैतिक तथा मानवीय मूल्यों के साथ तथा आधुनिकतावादी सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए कहीं ना कहीं हम उससे निश्चित रूप से पिछड़ रहे हैं। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में सुधार कर आधुनिकता की अवधारणा के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

आधुनिकीकरण में शिक्षा की भूमिका के संबंध में प्रसिद्ध शिक्षा समाजशास्त्री प्रोफेसर सी हेराल्ड एंडरसन ने अपने बहुमूल्य विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि विश्व में अधिकांशतया आज हम शिक्षा का जो आधुनिकीकरण देख रहे हैं वह शिक्षा के द्वारा किए गए आधुनिकीकरण के समान है। किसी पाठशाला की शिक्षा आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक पूर्ण शिक्षा का महज एक हिस्सा ही होती है व्यावहारिक रूप से आधुनिकीकरण और शिक्षा की समस्या को दो-तीन प्रश्न उठा कर स्पष्ट किया जा सकता है। उसमें एक यह है कि देश के पास कितनी शिक्षा है और दूसरा यह है कि किस तरह की शिक्षा ग्रहण की जाए तथा तीसरा प्रश्न यह हो सकता है कि यदि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना है तो किस तरह से उच्च शिक्षा को प्राप्त करना चाहिए ताकि मूलभूत परिवर्तन लाया जा सके।

उपरोक्त प्रश्नों को यदि स्पष्ट करें तो निश्चित रूप से शिक्षा और आधुनिकीकरण की परस्पर प्रक्रिया को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। देश में कैसी शिक्षा व्यवस्था हो तथा कितनी हो इसका आकलन बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों तथा नीति निर्माताओं को अवश्य करना चाहिए। आधुनिकीकरण के लिए उचित एवं उपयुक्त शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता होती है। देश की युवा पीढ़ी को उचित शिक्षा प्रदान कर उन्हें कार्य कुशल बनाया जा सकता है। कौशल रहित शिक्षा से हम डिग्री धारियों की संख्या तो अवश्य बढ़ा रहे हैं जिससे बेरोजगारी की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है लेकिन अर्थपूर्ण तथा कौशलयुक्त आधुनिक आवश्यकताओं को यथावत पूरा करने वाली शिक्षा हम युवाओं को नहीं दे पा रहे हैं। इसलिए आज शिक्षा में आधुनिकीकरण समय की एक आवश्यक मांग है। सामान्य शिक्षा व्यवस्था जो वर्षों से चली आ रही है उसकी प्रासंगिकता वर्तमान आवश्यक आधुनिकता के विकासवादी दौर में अब खत्म होती जा रही है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था के महत्व को समझना वर्तमान समय में अपरिहार्य है।⁶

आधुनिकीकरण की दौड़ में स्वयं को शामिल कर विकास के नए प्रतिमान स्थापित करने के लिए और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए आज शिक्षा में उचित पाठ्यवस्तु के साथ-साथ उचित आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक तकनीकों, शिक्षण पद्धतियों, विधियों तथा उपकरणों का सही प्रयोग कर हम युवा पीढ़ी को स्वावलंबन की राह पर आगे ले जा सकते हैं।

कोठारी आयोग 1964- 66 ने आधुनिकीकरण के महत्व पर विशेष बल दिया है। कोठारी आयोग ने अपने बहुमूल्य सुझावों में यह स्पष्ट किया है कि यदि देश को सशक्त करना है तो आधुनिकीकरण को अविलंब अपनाना होगा तभी भारत एक आधुनिक लोकतांत्रिक राष्ट्र बन सकेगा। उसके पश्चात भी भारत की शिक्षा नीतियों में आधुनिकीकरण पर निश्चित रूप से बल दिया गया। लेकिन आज 21वीं शताब्दी में भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में आशानुरूप परिवर्तन नहीं हुए। ग्रामीण भारत में शिक्षा के स्तर तथा शैक्षिक सुविधाओं का नितांत अभाव है। आधुनिकीकरण की यह प्रक्रिया अभी भी ग्रामीण भारत तक पहुंचाने में सरकारें कहीं ना कहीं असमर्थ रही है। देश के विभिन्न राज्यों में यदि विद्यालय तथा शिक्षकों की स्थिति पर नजर डालें तो स्थिति चिंताजनक नज़र आती है।

आधुनिक तकनीकों, विधियों तथा उपकरणों से आज भी अधिकांश ग्रामीण विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी वंचित है। इसी प्रकार यदि शिक्षकों की स्थिति पर नजर डालें तो वह इससे भी अधिक दयनीय है। शिक्षकों की अस्थायी नियुक्तियां इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। इन अस्थायी शिक्षकों को सदैव यही डर सताता रहता है कि न जाने कब उनके स्थान पर कोई नियमित शिक्षक आ जाएगा और उनकी सेवाएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी। इन शिक्षकों की स्थिति किसी से छिपी नहीं है। बहुत ही अल्प वेतन पर अस्थायी शिक्षकों से शिक्षण सेवाएं ली जाती हैं जिससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आशाअनुप परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं। इन शिक्षकों में निराशा के भाव उत्पन्न होने की वजह से शिक्षा प्रक्रिया बाधित होती है। ऐसे वातावरण में शिक्षा में

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को कैसे सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया जा सकता है जब शिक्षक ही अस्थायी होंगे और महंगाई की मार से घर परिवार का खर्च पूरा करने में असमर्थ होंगे तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया बाधित होना स्वाभाविक है।

शिक्षा में आधुनिकीकरण के लिए शिक्षकों की स्थिति में सुधार लाना, शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाना तथा विद्यालयों में समस्त आधुनिक शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है तभी शिक्षा में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बल मिलेगा। शिक्षा को आधुनिकीकरण का एक मजबूत यंत्र बनाने के लिए शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक दोषरहित तथा निष्पक्ष बनाकर सबके लिए समान अवसर पैदा करने होंगे। शिक्षा समाज को उचित गति प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम है। इस प्रकार एक गतिशील समाज ही पुरानी रूढ़ीवादी परंपराओं का त्याग कर एक नए परिवेश में आधुनिकीकरण के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

आधुनिकीकरण के लिए शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए कुछ मुख्य बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं जैसे...अच्छे विद्यालयों का निर्माण करना, गुणात्मक शिक्षा पर बल देना, अच्छे प्रशिक्षित अध्यापक नियुक्त करना, शिक्षा प्रणाली में सुधार लाना, अच्छा अधिगम युक्त वातावरण तैयार करना, अच्छी शिक्षण विधियों का इस्तेमाल करना, अच्छे पाठ्यक्रम तथा आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करना। इन उपरोक्त वर्णित बिंदुओं पर अगर हम प्रकाश डालें तो इससे यह सिद्ध होता है कि भारत में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए अविलंब कुछ आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है।

गुणात्मक शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का सशक्तिकरण

शिक्षा में आधुनिकीकरण के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। आधुनिकीकरण वर्तमान समय की बढ़ती हुई मांग है और हमें इसके लिए आवश्यक रूप से निश्चित कदम उठाने चाहिए। शिक्षा में आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से शिक्षा को रोचक बनाया जा सकता है। शिक्षा में आधुनिकीकरण के लिए जो भी उपरोक्त वर्णित बिंदु हैं उन बिंदुओं पर विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक गतिशीलता के लिए और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए शिक्षा में आधुनिकीकरण अत्यंत आवश्यक है। समाज के सभी वर्ग के बच्चों को बेहतर आधुनिक सुविधायुक्त शिक्षण संस्थानों में अच्छे शिक्षकों के सान्निध्य में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। देश का हर बच्चा तथा हर युवा बेहतर शिक्षा ग्रहण कर भविष्य में राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसलिए आधुनिकता के संदर्भ में शिक्षार्थियों को शिक्षा के व्यापक अर्थ से अवगत कराकर उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा, शिक्षक तथा आधुनिकता के संबंध में आज गहन चिंतन करने की आवश्यकता है ताकि हम राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण के लिए अपनी भावी पीढ़ी को तैयार कर सकें। हमारी शिक्षा प्रणाली कैसी हो...? हमारे शैक्षिक संस्थान कैसे हों? हर स्तर के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम एवं पाठ्यवस्तु निर्धारण तथा प्रत्येक शिक्षण संस्थान में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएं तथा

उसमें अध्यापन कार्य करने वाले शिक्षक कैसे हों ...? इन सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है।

आज आधुनिकता की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में हम तीव्र गति से आगे बढ़ रहे हैं। हम हर चुनौती का डटकर सामना कर रहे हैं लेकिन यह कटु सत्य है कि सफर इतना आसान नहीं है। इसके लिए हमें निश्चित रूप से अपनी शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षकों की स्थिति में सुधार लाना होगा।

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है इसलिए राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अच्छी शिक्षा व्यवस्था और अच्छे शिक्षक राष्ट्र की दशा और दिशा बदल सकते हैं। इसलिए इस पर यथासमय ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है।⁷

अच्छी शिक्षा, अच्छे शिक्षक, अच्छे शिक्षण संस्थान तथा अच्छी शिक्षण तकनीकी के द्वारा ही हम आधुनिकता की दौड़ में तेजी से आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए आज इस पर अविलंब विचार विमर्श करने की आवश्यकता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली तेजी से बदलते वैश्विक समीकरणों तथा आधुनिक वैश्विक प्रतिस्पर्धा की तीव्र दौड़ में भावी पीढ़ी को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूती के साथ खड़ा करने में कहीं ना कहीं असमर्थ दिखाई देती है। इसलिए आधुनिक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में भारत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में समर्थ हो सके इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें अपनी शिक्षा नीतियों, पाठ्यक्रमों, शिक्षण संस्थानों, शिक्षण तकनीकी तथा अन्य सभी आवश्यक शैक्षिक सुविधाओं पर यथासमय ध्यान देने की आवश्यकता है। हम भावी पीढ़ी को अधिगम युक्त वातावरण प्रदान कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों से लड़ने के लिए तैयार कर सकें हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। जो शिक्षा डिग्री धारियों की संख्या बढ़ाए तथा दिनोंदिन बेरोजगारी उत्पन्न करे वह शिक्षा किस काम की। ऐसी शिक्षा ग्रहण कर तथा ऐसी शिक्षा व्यवस्था को अपनाकर राष्ट्र तेजी से उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। अतः आज आवश्यकता है कि हम अपने बच्चों तथा युवाओं को ऐसी गुणात्मक शिक्षा प्रदान करें जिससे हमारी भावी पीढ़ी उच्च कौशल युक्त शिक्षा ग्रहण कर स्वयं को बेरोजगार और असहाय महसूस ना करें बल्कि स्वावलंबी और आत्मनिर्भर होकर राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दे सकें।

निष्कर्ष:

भारतीय शिक्षा प्रणाली ने समय के साथ अनेक बदलावों को अपनाया है। प्राचीन काल की मूल्य आधारित शिक्षा से लेकर आज की तकनीक आधारित आधुनिक शिक्षा तक, यह यात्रा ज्ञान के विस्तार और समाज के विकास का प्रतीक रही है। आधुनिकता ने शिक्षा को अधिक सुलभ, व्यावहारिक और वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान किया है, वहीं भारतीय परंपराओं ने उसमें नैतिकता, संस्कृति और जीवन मूल्यों की गहराई जोड़ी है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम भारतीय शिक्षा की सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखते हुए, आधुनिक तकनीकों और विचारों को समावेशित करें, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल विद्वान हों, बल्कि संस्कारी, जिम्मेदार और जागरूक नागरिक भी बन सकें। भारतीय शिक्षा और आधुनिकता का समन्वय ही देश को एक सशक्त, समृद्ध और उन्नत भविष्य की ओर ले जा सकता है।

संदर्भ:

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (भारत सरकार)**
– शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित दस्तावेज।
– <https://www.education.gov.in>
2. **प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था**
– डॉ. राधाकृष्णन की रिपोर्ट (University Education Commission, 1948–49)
– भारतीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) की वेबसाइट।
3. **भारतीय संस्कृति और शिक्षा**
– लेखक: डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
– प्रकाशक: भारतीय विद्या भवन
4. **भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास**
– लेखक: राम शरण शर्मा
– प्रकाशक: नेशनल बुक ट्रस्ट
5. **शिक्षा में आधुनिक तकनीकी प्रयोग**
– डिजिटल इंडिया अभियान से संबंधित सरकारी रिपोर्टें।
– <https://www.digitalindia.gov.in>
6. **NCERT पाठ्यपुस्तकें (समाज विज्ञान / नागरिक शास्त्र / शिक्षा)**
– कक्षा 9 से 12 तक की किताबें
– <https://ncert.nic.in>
7. **शोध पत्र: "भारतीय शिक्षा और आधुनिकता का अंतर्संबंध"**
– भारतीय शैक्षणिक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित (जैसे Shodhganga या UGC Care List Journals)
– <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>